शोध प्रस्ताव

शोध प्रस्ताव का शीर्षक :-

बिहार में उच्चतर शिक्षा के प्रसार में डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम के प्रभावों का मूल्यांकन (2015-2023)

MBVerma 20.04.2024

Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

20.04.24

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सामाजिक विज्ञान संकाय

राजनीति विज्ञान विभाग

पी. ए. टी. सत्र - 2021-2022

पर्यवेक्षक
MBVerma 13.04.2024
डॉ. मुकुल बिहारी वर्मा
Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

शोधकर्ता
Kundan Kumar Katyayan 13.04.2024
कुन्दन कुमार कात्यायन

शोध प्रस्ताव का शीर्षक :-

बिहार में उच्चतर शिक्षा के प्रसार में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के प्रभावों का मूल्यांकन (2015-2023)

शोध समस्या का प्राक्कथन :-

राजनीतिक चिंतन के लिए *शिक्षा* एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। क्योंकि शिक्षा ही वह सबसे सशक्त माध्यम है जिसके आधार पर शासन को स्थिर रखना एवं व्यक्ति तथा समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना सरल हो पाता है। ऐसे में जब बात *उच्चतर शिक्षा* की हो तो यह एक स्थापित तथ्य है कि *उच्चतर शिक्षा* का प्रसार सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से सकारात्मक दिशा में परिवर्तन को साकार करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

उच्चतर शिक्षा व्यक्ति को जागरूक नागरिक के रूप में न केवल परिणत कर सकने की क्षमता रखती है, बल्कि नागरिकों को राजनीतिक दृष्टि से सक्षम भी बनाती है। अधिकार-कर्तव्य, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, लोकतंत्र में शासन-प्रशासन आदि, राजनीतिक अवधारणाओं की न केवल सैद्धांतिक बल्कि व्यावहारिक समझ का विकास सामाजिक विज्ञान में उच्चतर शिक्षा से ही संभव है, जो सचेत राजनीतिक सहभागिता के लिए आधार का निर्माण करती है। सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक सुधार में उच्च शिक्षा प्राप्त नागरिकों के योगदान का एक लंबा इतिहास रहा है। सुकरात और उनके शिष्यों, सामाजिक समझौतावादी सिद्धांतकारों, समाजवादियों-साम्यवादियों, व्यवहारवाद और उत्तर व्यवहारवाद के समर्थकों, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के मनीषियों आदि के विषय में प्राप्त जानकारी के आलोक में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि "सामाजिक विज्ञान में उच्च शिक्षा सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम है, और क्योंकि राजनीतिक सत्ता और शक्ति व्यक्ति और समाज के विकास में सबल भूमिका के निर्वाह में समर्थ होते हैं तो ऐसे में *उच्चतर शिक्षा से नागरिकों की वंचना* एक राजनीतिक समस्या है।" अतः इसका समाधान आवश्यक है।

MBVarma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार का शिक्षा के संबंध में प्रथम आयोग, **'विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग'** था, जो कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 4 नवंबर 1948 को गठित किया गया था। इसकी स्थापना इस बात को प्रमाणित करता है कि भारत का राजनीतिक वर्ग और सरकार प्रारंभ से ही उच्चतर शिक्षा को लेकर सजग और संवेदनशील रही है। उच्चतर शिक्षा को मात्रा एवं गुणवत्ता की दृष्टि से मजबूत बनाने के लिए तब से ही प्रयासरत भारत सरकार, समय-समय पर नई परिस्थितियों एवं युग परिवर्तन के आलोक में शिक्षा को ***प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष*** रूप से प्रभावित करने वाले नए-नए कार्यक्रम एवं नीतियाँ लाती रही है। ऐसे ही कार्यक्रमों में ***डिजिटल इंडिया कार्यक्रम (2015)*** भी शामिल है। जिसके द्वारा हुए इंटरनेट के विस्तार ने उच्चतर शिक्षा पर व्यापक प्रभाव डाला है। 21वीं शताब्दी की इस चौथी औद्योगिक क्रांति काल में तकनीकी जगत में हो रहे नए-नए आविष्कारों जैसे, आर्टिफिशल इंटेलिजेंस, सुपर कंप्युटर, थ्री डैमेनशनल प्रस्तुति, रोबाटिक्स आदि के द्वारा उच्चतर शिक्षा के हितधारक, जैसे-छात्र, शिक्षक, अभिभावक, शिक्षण संस्थाएं, सरकार आदि, लगातार लाभान्वित हो रहे हैं। परंतु अभी ये सामग्रियाँ आम नहीं हुई हैं। फिर भी कंप्युटर, लेपटॉप एवं मोबाईल के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग शैक्षिक उद्देश्य से करना एक प्रकार से आम होता जा रहा है। इन उपयोगिताओं को ध्यान में रखकर ही सार्वजनिक शिक्षण संस्थानों में ***डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर*** का निर्माण बड़े स्तर पर किए गए हैं और जहां अभी भी ऐसे इन्फ्रास्ट्रक्चर का अभाव है, सरकारें (संघ एवं प्रांत) उस दिशा में लगातार कार्य कर रही हैं। प्रस्तुत शोध में इस बात की खोज की जाएगी कि :-

- कैसे उच्चतर शिक्षा का प्रसार डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता का एक महत्वपूर्ण कारक है?
- डिजिटल इंडिया कार्यक्रम उच्चतर शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी बनाने में कितना सफल रहा
- विशेषकर बिहार की उच्चतर शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी बनाने में इस कार्यक्रम के योगदानों, चुनौतियों एवं संभावनाओं की गवेषणा प्रस्तुत शोध के लिए मुख्य प्रश्न है। जिसका उत्तर ढूँढ़ना प्रस्तुत शोध प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य है।

शोध का आच्छादन: सार तत्व एवं क्षेत्र :-

राज्य, राजनीतिक चिंतन एवं शिक्षा में अन्योन्याश्रय संबंध है। इस कथन के संबंध में कुछ बातें अहम हैं जिन पर गौर करना आवश्यक है जो अगले पृष्ठों में अंकित हैं -

MBVarma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

1. राज्य, राजनीति चिंतन और शिक्षा - प्राचीन राज-व्यवस्थाओं में भी उच्चतर शिक्षा के लिए व्यवस्था थी। वैसे गुरुकुल प्रणाली भारतीय समाज की एक प्राचीन व्यवस्था थी, जिसमें शिक्षक के घर पर रहकर विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे, परंतु ***राजसत्ताओं*** द्वारा भी शिक्षा हेतु शिक्षण संस्थान या ज्ञानार्जन में लगे वेदपाठियों को सहायता दी जाती थी, जैसा कि मनुस्मृति, महाभारत, तक्षशिला एवं नालंदा आदि के विषय में अध्ययन से प्रमाणित होता है। फिर भी समाज में उच्चतर शिक्षा सर्वसुलभ नहीं थी। क्योंकि उत्तरवैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के, जन्म आधारित होने के साथ ही यह निश्चित हो गया कि ज्ञान पर केवल ब्राह्मणों का एकाधिकार रहेगा और इस तरह समाज का एक बहुत बड़ा तबका उच्चतर शिक्षा से वंचित रहा। कालांतर में महावीर (599-527 ई. पू.) एवं महात्मा बुद्ध (563-483 ई. पू.) द्वारा दी गई शिक्षा ने वैदिक शिक्षा से भिन्न एक नवीन व्यवस्था को जन्म दिया। हालाँकि, वैदिक शिक्षा व्यवस्था तब भी अस्तित्व में बनी रही। इस समय जहाँ एक ओर जैन मतावलंबियों ने कई जैन मंदिरों एवं महास्तम्भों की स्थापना की यहाँ श्रमण और श्रावक छात्र अपनी रुचि एवं आवश्यकतानुसार अध्ययन करते थे वही कालांतर में दूसरी ओर बुद्ध एवं उनके मतावलंबियों ने बौद्ध संघ/मठ/विहार की स्थापना की, जो बौद्ध शिक्षा के केंद्र बिन्दु थे। ऐसे जैन मंदिरों एवं बौद्ध संघों को भी ***राजसत्ताओं*** ने अपना सहयोग दिया यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। आपसी विभाजन, मुस्लिम आक्रमणकारियों (8वीं - 12वीं शताब्दी) एवं मुस्लिम शासकों (1192 ई.-1857 ई.) की उदासीनता के कारण जैन एवं बौद्ध शिक्षा के साथ-साथ वैदिक शिक्षा के केंद्र नगण्य होते गए। क्योंकि ***राजसत्ताओं*** ने इन्हें प्रश्रय देना बंद कर दिया। मुस्लिम शासकों में ज्यादातर ने इस्लामी रीति की शिक्षा को ही बढ़ावा दिया। मुस्लिम शासन के दौरान ही ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी (1600) भारत आयी (1608, सूरत) और 1757ई. में इस कंपनी द्वारा राजनैतिक हस्तक्षेप प्रारंभ हुआ, जो कि 1857ई. तक भारत के लगभग सम्पूर्ण भू-भाग पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ढंग से सत्तासीन हो गयी। 1857 ई. के क्रांतिकारी संघर्ष के बाद 1858 ई. से 1947 ई. तक भारत की राजनीतिक सत्ता प्रत्यक्षतः ब्रिटिश सरकार के हाथों में रही। ईस्ट इंडिया कंपनी एवं ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ धर्म पर आधारित शिक्षा प्रणाली पर तर्क एवं विज्ञानवाद का व्यापक प्रभाव पड़ता है। सन 1813 ई. के आज्ञा पत्र (Charter Act) से लेकर 1944 ई. के सार्जेंट योजना (Sargent Plan) तक ब्रिटिश राज सत्ताओं

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण के नाम पर पूर्णतः पश्चिमीकरण/यूरोपीयकरण कर दिया। इसी दौरान यूरोपीय प्रकार तथा यूरोप से उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर भारतीय मनिषियों, यथा राजा राम मोहन रॉय, तिलक, अरबिंद, महात्मा गाँधी, डॉ. अंबेडकर, पं. नेहरू आदि, ने ब्रिटिश राजसत्ता के विरुद्ध प्रतिरोधक आंदोलन अभियान भी चलाए। इनमें से कई देशी शिक्षण संस्थानों की वकालत कर रहे थे तो कई भारतीय एवं यूरोपीय मिश्रित शिक्षण संस्थानों के। परंतु ब्रिटिश सत्ता ज्यादातर अंग्रेजी प्रकार के शिक्षण व्यवस्था की ही पक्षधर रही। फिर भी ब्रिटिश शासनकाल भारत की उच्चतर शिक्षा में तर्कवाद, विज्ञानवाद एवं भौतिकवाद की ओर उन्मुखता निर्माण की दृष्टि से काफी सफल रहा। हालाँकि, *नगण्य **मात्रा** में इस दौरान भी भारतीयों को उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने का **अवसर** मिला।*

उपरोक्त बातों से इतना तो अवश्य सिद्ध होता है कि, *राज्य की राज-सत्ता का धारक शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करता है और जिस प्रकार के लोगों के पास सत्ता हो वे उसी प्रकार से शिक्षा व्यवस्था का निर्माण कर शासन को स्थिर तथा समाज को उसी दृष्टि से विकास के पथ पर अग्रसर करने का प्रयास करते हैं।*

राजनीतिक चिंतकों जैसे - प्लेटो, अरस्तू, लॉक, रूसो, मिल, भारतीय श्रुति-स्मृति, महाकाव्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, राजा राममोहन रॉय, तिलक, गांधी, अरबिंदो, अंबेडकर, नेहरू आदि के राजनीतिक चिंतन में उच्चतर शिक्षा के महत्व का प्रतिपादन स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं। ये सभी युग-परिवर्तन एवं युग-निर्माणकारी रहें हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर शिक्षा एवं राजनीतिक चिंतन एक दूसरे से सम्बद्ध रहे हैं और शिक्षा, राज्य एवं राजनीतिक चिंतन में गहरा तथैव अन्योन्याश्रय संबंध है। अतः *राजनीति विज्ञान के छात्रों का यह कर्तव्य है कि बहुआयामी प्रभावोत्पन्नकर्त्री उच्चतर शिक्षा पर राजसत्ताओं के कार्यक्रमों एवं नीतियों के प्रभावों की समीक्षा करें।*

2. स्वातंत्र्योत्तर भारत सरकार और उच्चतर शिक्षा - स्वतंत्र भारत में शिक्षा के संबंध में पहला आयोग (1948) से लेकर 2017 में कस्तूरीरंगन समिति तक अनेक आयोग भारत सरकार ने गठित किए और शिक्षा व्यवस्था को सुधारने एवं समाज में इसका विस्तार करने के भरसक प्रयास किए। इसके फलस्वरूप कई शिक्षा नीतियाँ (1968,1986,2020) भी आयी, परंतु हालात ये हैं कि आज भी (AISHE REPORT 2021-22) भारत में 18-23 वर्ष आयु वर्ग से उच्चतर शिक्षा में कुल नामांकन अनुपात 30% से भी कम (28.4%) है। यह राजनीतिक सत्ताधारियों एवं राजनीति विज्ञान के

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

शोधार्थियों के समक्ष एक गंभीर प्रश्न है कि, *किन कारणों से उच्चतर शिक्षा के कुल नामांकन अनुपात (GER) में भारत की एक तिहाई आबादी आज भी शामिल नहीं है, जबकि भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति को* ***तीन-चौथाई शताब्दी*** *(75 वर्ष) बीत चुके हैं? बिहार में तो यह और भी कम है, जहाँ उपरोक्त आयु वर्ग से उच्चतर शिक्षा में मात्र 17.1% ही कुल नामांकन अनुपात है।*

3. 2014 से भारत में सत्तारूढ़ सरकार और उच्चतर शिक्षा - भारतीय जनता पार्टी 2014 में 26 मई को संघ सरकार में सत्तासीन हुई। पूर्व की सरकारों की तरह सत्तारूढ़ भाजपा सरकार भी शिक्षा को लेकर गंभीर है और जब बात उच्चतर शिक्षा की हो तो सरकार इस दिशा में भी लगातार प्रयास कर रही है। परंतु एक जीवंत प्रश्न यह है कि 2015-2023 के दौरान उच्चतर शिक्षा में इस सरकार द्वारा क्या बदलाव किए गए जो मात्रात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं?
4. भारतीय संविधान एवं शिक्षा - शिक्षा को भारतीय संविधान में समवर्ती सूची में रखा गया है। अर्थात् शिक्षा के संबंध में नीति बनाने का अधिकार संघ एवं प्रांत दोनों ही सरकारों को प्राप्त है। ऐसे में उच्चतर शिक्षा से वंचित भारत के 70% से ज्यादा लोग(18-23 वर्ष) जहाँ संघ सरकार से प्रश्न पूछने का अधिकार रखते हैं, वहीं बिहार की 80% से अधिक आबादी(18-23 वर्ष) बिहार की प्रांतीय सरकार से भी यह प्रश्न पूछने का अधिकार रखती है कि, आज भी वे उच्चतर शिक्षा से वंचित क्यों हैं? सरकारें उच्चतर शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने के लिए क्या कर रही है? उच्चतर शिक्षा को अधिक समावेशी बनाने के लिए सरकारों के समक्ष कौन-कौन सी चुनौतियाँ एवं संभावनाएं हैं?
5. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम और उच्चतर शिक्षा- इस कार्यक्रम द्वारा भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था के रूप में तैयार करने की बात की गई है। घोषित रूप से यह कार्यक्रम भारत को ज्ञान के भविष्य के लिए तैयार करने की दिशा में आईटी (Information Technology) + आईटी (Indian Talent) = आईटी (India Tomorrow) को महसूस करने के लिए परिवर्तनकारी होने पर ध्यान केंद्रित करने की बात करता है। यह एक अम्ब्रेला कार्यक्रम है जो कई विभागों को कवर करता है। यह बड़ी संख्या में विचारों को एक साथ बुनता है ताकि उनमें से प्रत्येक को एक बड़े लक्ष्य के हिस्से के रूप में देखा जा सके और यह लगे कि भले प्रत्येक व्यक्तिगत तत्व अपने दम पर खड़ा है लेकिन यह भी बड़ी तस्वीर का हिस्सा है। इसे डीईआईटीवाई

MBVarma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

(Department of Electronics and Information Technology) समन्वित करता है, जिसे पूरी सरकार द्वारा लागू किया जाता है। यह कार्यक्रम कई मौजूदा योजनाओं को न केवल एक साथ लाता है बल्कि उन योजनाओं का पुनर्गठन करने और उन पर फिर से ध्यान केंद्रित करने की ओर भी काम करने की बात करता है। इस कार्यक्रम को सिंक्रनाइज़ (Synchronize) तरीके से लागू किये जाने की बात की गई है। अर्थात् यह कार्यक्रम एक साथ एक ही समय पर कई कार्यों को प्रभावित करेगा। न्यूनतम लागत के साथ प्रक्रिया सुधार की दिशा में भी यह कार्यक्रम आगे बढ़ने की बात करता है।

डिजिटल इंडिया की दृष्टि(vision) तीन प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है ---

- ***प्रत्येक नागरिक के लिए एक उपयोगिता के रूप में डिजिटल बुनियादी ढांचा (Digital Infrastructure as a Utility to Every Citizen)***
- ***मांग पर शासन और सेवाएं (Governance & Services on Demand)***
- ***नागरिकों का डिजिटल सशक्तिकरण (Digital Empowerment of Citizens)***

डिजिटल इंडिया के नौ स्तंभ---

क. ब्रॉडबैंड राजमार्ग (Broadband Highways)

ख. फोन के लिए यूनिवर्सल एक्सेस (Universal Access to Phones)

ग. सार्वजनिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम (Public Internet Access Programm)

घ. ई-गवर्नेंस - प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार (E-Governance – Reforming government through Technology)

ङ. ईक्रांति - सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी (eKranti – Electronic delivery of services)

च. सभी के लिए सूचना (Information for All)

छ. इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण - लक्ष्य शुद्ध शून्य आयात (Electronics Manufacturing – Target NET ZERO Imports)

ज. नौकरियों के लिए आईटी (IT for Jobs)

झ. शीघ्र फसल कटाई कार्यक्रम (Early Harvest Programme)

आज के भारत में यह स्पष्टतः देखा जा रहा है कि, डिजिटल क्रांति से देश की सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक व्यवस्था निश्चय ही प्रभावित हुयी है। ऐसे में उच्चतर शिक्षा इससे अछूता नहीं रहा है। अतः प्रस्तुत शोध में यह गवेषणा करने के

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

प्रयास की योजना है कि, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम सामाजिक विज्ञान में उच्चतर शिक्षा के लिए अवसर की समानता की दृष्टि से कितना सकारात्मक प्रभाव डालने वाला रहा? इस कार्यक्रम के सामाजिक विज्ञान में उच्चतर शिक्षा के लिए सकारात्मक प्रभाव वाला

स्रोत - डिजिटल इंडिया एक्स (ट्विटर) अकाउंट

होने के समक्ष कौन-कौन सी संभावनाएं एवं चुनौतियाँ हैं? और मुख्य रूप से यह बिहार की उच्चतर शिक्षा में मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन लाने में कितना सहायक हो रहा है, तथा हो सकता है?

6. उच्चतर शिक्षा में डिजिटल अवसंरचना - **डिजिटल उपकरणों द्वारा अध्ययन सामग्री तक पहुंच,** वर्तमान समय में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में सामने आया है। यूनेस्को (UNESCO) के वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट -2023 (GEMR-2023) के अनुसार ***"खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में छात्रों की संख्या 2012 में 0 से बढ़कर 2021 में कम से कम 220 मिलियन (22 करोड़) हो गई है।"*** भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है।

MS Varma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan

वैसे तो इन्टरनेट का शैक्षिक उद्देश्य से प्रयोग पहले के वर्षों में भी छात्रों, शिक्षकों एवं शिक्षण संस्थाओं में हो रहे थे। परन्तु, कोरोना वायरस के कारण हुए लॉक डाउन से उपजी परिस्थिति(2020-22) एवं उसके उपरांत डिजिटल साधनों के प्रति प्रकट हुई

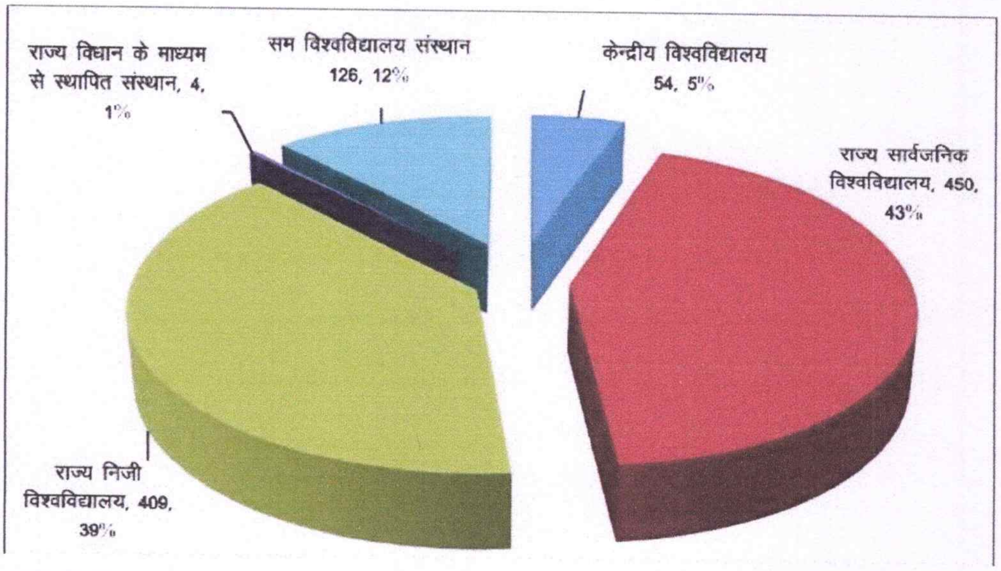

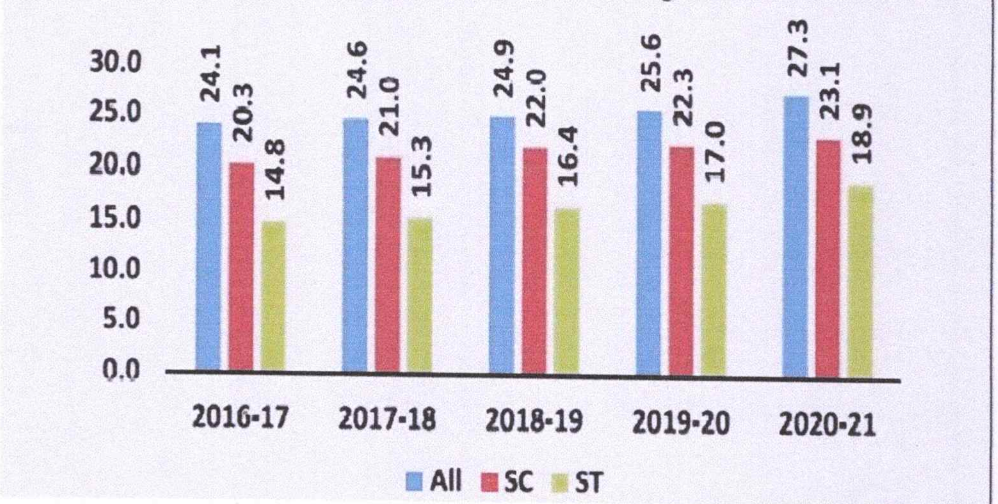

Figure 64: Category-wise GER during last 5 Years

स्रोत - AISHE ANNUAL REPORT 2020-21

उपयोगिता के महत्व को देखते हुए, भारत में पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्चतर शिक्षा तक, लगभग सभी स्तरों, विशेषकर उच्चतर स्तर पर अध्ययन-अध्यापन में डिजिटल उपकरणों एवं इंटरनेट की सहायता ली जा रही है।

MBVarma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

1 जुलाई 2015 को भारत सरकार ने **'डिजिटल इंडिया कार्यक्रम'** की शुरुआत की। इस कार्यक्रम की घोषणा को आठ वर्ष से अधिक हो चुके हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा ***'ज्ञान अर्थव्यवस्था'*** के निर्माण की बात की गई है। ज्ञान के लिए **शिक्षा** एक आधार स्तम्भ है, विशेषकर बात जब उच्चतर शिक्षा की हो तब, यह जानना प्रासंगिक हो जाता है कि, क्या इस कार्यक्रम ने उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता एवं मात्रा की दृष्टि से सकारात्मक प्रभाव डाला है या नहीं? क्या इस दिशा में सरकार द्वारा और भी कुछ करना जरूरी है? कहीं इस कार्यक्रम से उपजी परिस्थितियों ने किसी नवीन समस्या को जन्म तो नहीं दिया? क्योंकि इन्टरनेट तक पहुंच प्रदान करना, डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। अतः यह आवश्यक है कि इसके प्रभाव की जांच की जाए।

26 जुलाई 2020 से एन. डी. ए. सरकार की महत्वाकांक्षी, **'राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020'** को भी लागू किया जा चुका है। इस नीति के भाग - तीन, अध्याय - 23 एवं 24 में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा में डिजिटल तकनीकों के उपयोग करने के विषय में चर्चा की गई है। अतः यह आवश्यक है कि डिजिटल अवसंरचना की अवस्था की जांच की जाए।

7. बिहार की उच्चतर शिक्षा में मात्रा एवं गुणवत्ता वर्धन में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के समक्ष संभावनाएं एवं चुनौतियां - 2015-16 में जहां बिहार सरकार अपने वार्षिक वित्तीय विवरण में शिक्षा विभाग के लिए 22027.96 करोड़ रुपये का प्रस्ताव कर रही थी, वह 2023-24 के लिए बढ़कर 40450.91 करोड़ की हो गई है । ऐसे में बिहार के संदर्भ में, यह प्रश्न उठना स्वाभाविक हो जाता है कि, क्या गुणवत्ता पूर्ण उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने तथा प्रदान करने में भौतिक एवं मानवीय अवसंरचना निर्माण कर शिक्षण-अधिगम को आसान बनाने में बिहार सरकार सफल रही, या अभी और भी कुछ करना शेष है? डिजिटल-उपक्रमों द्वारा अध्ययन सामग्री तक पहुंच से बिहार में उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र-छात्राओं को कितना लाभ मिला? डिजिटल उपकरणों द्वारा अध्ययन सामग्री तक पहुंच ने किन-किन संभावनाओं एवं चुनौतियों को जन्म दिया है, और **सरकारें** इस दिशा में और क्या-क्या कर सकती हैं ताकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 द्वारा उच्चतर शिक्षा में 2035 के लिए लक्षित *सकल नामांकन अनुपात* में 50% के लक्ष्य को ससमय प्राप्त किया जा सके ? प्रस्तुत शोध कार्य में इन्ही विषयों पर अध्ययन किया जाएगा ।

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar Katyayan
13.04.2024

क्षेत्र की दृष्टि से यह शोध राजनीतिक चिंतन एवं भारत में शासन के द्वारा निर्मित लोक नीतियों का उच्चतर शिक्षा विशेषकर सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र पर प्रभाव से सम्बद्ध होगा। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम एवं उच्चतर शिक्षा का एक दूसरे पर सकारात्मक प्रभाव के संबंध में

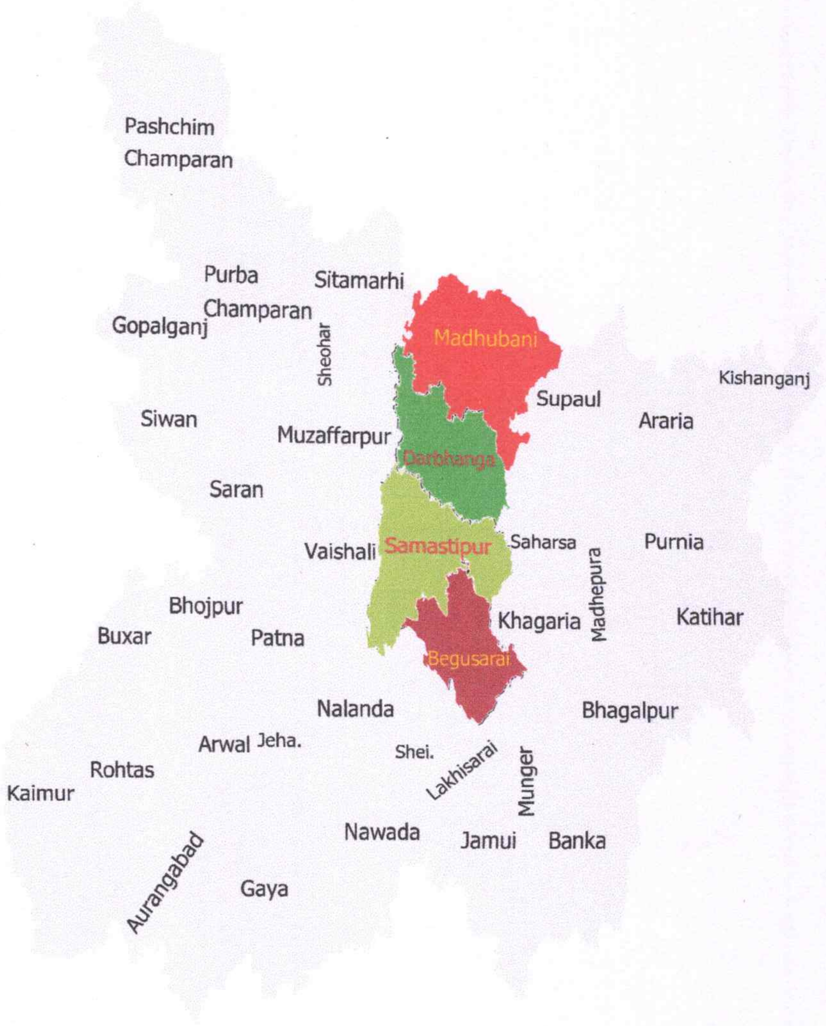

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

MBVerma
13.04.2024

तालिका 2.4: वर्ष 2016–17 से 2020–21 के दौरान वर्ष–वार और स्तर–वार आउट टर्न/पास आउट

स्तर	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21
पी.एच.डी.	28779	34400	40813	38986	25114
एम.फिल.	26325	28059	25787	18220	9802

स्तर	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21
स्नातकोत्तर	1477919	1504403	1500064	1577704	1444513
स्नातकपूर्व	6456386	6419639	6474715	6650071	6668221
स्नातकोत्तर डिप्लोमा	129032	143176	159697	189608	126866
डिप्लोमा	740561	737077	783914	807330	786479
प्रमाणपत्र	67933	75383	75358	80927	81666
समेकित पाठ्यक्रम	26151	26409	31550	39064	46328
कुल योग	8953086	8968546	9091898	9401910	9188989

*आंकड़े एआईएसएचई पोर्टल 2020–21 में वास्तविक प्रतिक्रिया पर आधारित है।

रेखाचित्र 2.4: वर्ष 2021-22 के दौरान स्तर-वार आउट टर्न/पास आउट (आईएसएचई पोर्टल 2020-21 के आंकड़े)

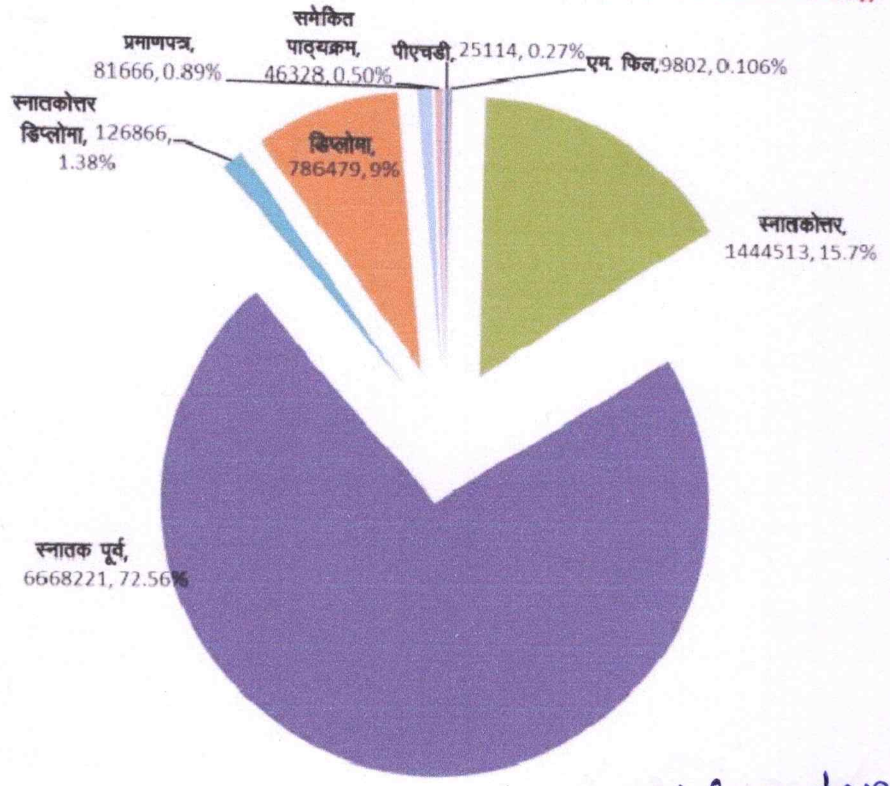

Kundan Kumar Katyayan
13.04.2024

MB Verma
13.04.2024

अवसंरचना (INFRASTRUCTURE) संबंधी चुनौतियों एवं संभावनाओं की खोज पर केंद्रित इस अनुसंधान के लिए, बिहार के दरभंगा जिले में स्थित ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के मुख्य कैम्पस तथा इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के सामाजिक विज्ञान संकाय के स्नातकोत्तर (P.G.) विभाग में आनुभविक अध्ययन किया जाएगा।

शोध प्रस्ताव हेतु उपलब्ध साहित्य की समीक्षा

पुस्तकें एवं अभिलेख

डॉ. एस. पी. गुप्ता एवं डॉ. अलका गुप्ता ने अपनी पुस्तक ***'भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें'*** में कहा है कि, "शिक्षा संस्थाओं की अनुपलब्धता, निर्धनता, शैक्षिक गुणवत्ता में अंतर, पारिवारिक परिवेश, यौन भेद, सामाजिक स्थिति आदि कारक शैक्षिक अवसरों में विषमताओं के लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।" इसी पुस्तक में वे *शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन में सहायक* के रूप में कहते हैं कि, "किसी भी समाज में परिवर्तन का होना स्वाभाविक व सतत प्रक्रिया होती है। कुछ समाजों में होने वाले परिवर्तनों की गति तीव्र होती है तथा कुछ समाजों में परिवर्तनों की गति मंद होती है। सामाजिक परिवर्तन अनेक कारकों से प्रभावित होता है। ***शिक्षा को वांछित सामाजिक परिवर्तन लाने का एक सशक्त साधन स्वीकार किया जाता है।*** शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके व्यक्तियों की रुचियों, विचारों, मूल्यों, दृष्टिकोणों आदि में सकारात्मक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। अध्यापक इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।" पुनः उन्होंने *शैक्षिक प्रशासन एवं नियोजन* के विषय में लिखा है कि, "संसाधनों की कमी, लालफीताशाही, कार्मिक वर्ग की अपर्याप्त संख्या, जनसहयोग का अभाव, समन्वय की कमी तथा दोषपूर्ण शैक्षिक नियोजन, शैक्षिक प्रशासन की कुछ महत्वपूर्ण कमियां हैं। विकेन्द्रीकरण, स्वायत्तता, सहभागिता, जनसंख्या नियोजन तथा समन्वय की *नीति* को अपनाकर एवं प्रशासनिक तंत्र को अधिक प्रभावशाली बनाकर शैक्षिक प्रशासन को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।" गुप्ता और गुप्ता ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के विषय में लिखा है कि, "आलोचनाओं के बावजूद इस नीति में अनेकानेक सकारात्मक पक्ष, भावी आशाएं एवं वैश्विक स्पर्धा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। अतः इस नीति को सकारात्मक रूप में लेते हुए इससे वांछित परिणाम पाने के लिए पूर्ण ईमानदारी, निष्ठा तथा दृढ़ता से लागू करना ही वर्तमान समय की मांग है।"

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

MBVerma
13.04.2024

यूनेस्को (UNSCO) के वैश्विक निगरानी रिपोर्ट (GEMR) - 2023, ***'शिक्षा में प्रौद्योगिकी: उपकरण किस कीमत पर?'*** जो कि प्रस्तुत शोध के लिए महत्वपूर्ण है, का सारांश–

क. प्रौद्योगिकी के प्रभाव पर शिक्षा अच्छी मिल पा रही है इसके निष्पक्ष प्रमाण बहुत कम ही उपलब्ध हैं।

ख. यह ठीक है कि प्रौद्योगिकी लाखों लोगों को शिक्षा का अवसर प्रदान करती है लेकिन फिर भी बहुत लोग तब भी वंचित रह जाते हैं।

ग. प्रौद्योगिकी शिक्षा के सभी संदर्भों में सुधार नहीं कर सकती है।

घ. प्रौद्योगिकी में द्रुत-गति से हो रहे परिवर्तन से शिक्षा प्रणालियों पर इसे अपनाने को लेकर दबाव बनाया जा रहा है।

ङ. ऑनलाइन सामग्री का पर्याप्त विनियम के बिना गुणवत्ता नियंत्रण या विविधता का विकास हुआ है।

च. प्रायः किसी कमी को पूरा करने के लिए प्रौद्योगिकी को खरीदा जाता है, जिसमें दीर्घावधि लागत को ध्यान में नहीं रखा जाता है जो अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक होती है ।

कुछ और महत्वपूर्ण बिंदुओं को यूनेस्को ने अपने इसी रिपोर्ट में रेखांकित किया है, जैसे- *प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से डिजिटल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में व्यापक प्रगति तेजी से दुनिया को बदल रही है। शिक्षार्थियों, शिक्षकों और संस्थानों ने पिछले 20 वर्षों में, डिजिटल प्रौद्योगिकी उपकरणों को व्यापक रूप से अपनाया है। शिक्षा और सीखने के तरीके में डिजिटल तकनीक को अपनाने से कई बदलाव हुए हैं।* यह रिपोर्ट इस बात पर भी जोर देता है कि *किस हद तक तकनीक ने शिक्षा को बदल दिया है, इस पर बहस की जरूरत है। शिक्षा में प्रौद्योगिकी को व्यापक रूप से अपनाने की आमतौर पर उच्च लागत चुकानी पड़ती है।* फिर भी यह रिपोर्ट उस ओर भी संकेत करते हुए कहता है कि *हालाँकि, डिजिटल तकनीक के बिना शिक्षा के प्रासंगिक होने की संभावना नहीं है। यह सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट उद्देश्यों और सिद्धांतों की आवश्यकता है कि प्रौद्योगिकी का उपयोग लाभ के लिए हो और यह नुकसान से बचाए।* तो क्या इस प्रश्न का भारत के संदर्भ में उठना लाजिमी नहीं?

डॉ. संगीता शर्मा एवं अन्य द्वारा लिखित पुस्तक ***'लोक नीति सिद्धांत एवं व्यवहार'*** भी प्रस्तुत शोध के उद्देश्य से अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसमें नीति के संबंध में विभिन्न

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

आयामों से तो अध्ययन किया ही गया है, साथ ही भारत की शिक्षा नीतियों एवं शिक्षा से जुड़ी बाधाओं का भी जिक्र किया गया है।

प्रदीप ठाकुर 2018 में प्रकाशित अपनी पुस्तक, ***'भारत में डिजिटल क्रांति'*** में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के समक्ष *इंटरनेट की उपलब्धता, इंटरनेट की स्पीड और बिजली की सतत उपलब्धता* को प्रमुख चुनौती के रूप में प्रस्तुत करते हैं। हालाँकि उन्होंने डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से भारत में होने वाली डिजिटल क्रांति को एक बड़ा कदम अवश्य माना है।

डॉ. शंकर शरण एवं डॉ. विजय कुमार की रचना, ***'शिक्षा एवं राजनीति'*** भी प्रस्तुत शोध के लिए प्रासंगिक है। जिसमें ये विद्वान लिखते हैं कि, "बड़ी संख्या में पश्चिमी विश्व के व्यक्ति जीवन में किसी शून्य को भरने की धुँधली कामना में पूरब के गुरुओं, महात्माओं, सन्तों की तलाश करते भारत, चीन, तिब्बत आदि देशों में आते रहते हैं। जबकि भारत से अच्छे-अच्छे सुखी, सम्पन्न घरों के युवक भी और अधिक धन, सुविधा आदि की लालसा में अमेरिका, यूरोप आदि स्थानों पर जाने, बसने की योजनाएँ बनाते रहते हैं। यह दोनों प्रवृत्तियाँ अविद्या और विद्या की समझ के अभाव और विलगाव को प्रकट करती हैं। इनका सम्यक योग होना ही समाधान है।" यह शिक्षा की गुणवत्ता के समक्ष एक साथ संभावना एवं चुनौती दोनों ही की व्याख्या प्रस्तुत कर रही रचना है जो प्रस्तुत शोध के लिए महत्वपूर्ण है।

डॉ. स्वपन कुमार बेरा एवं अन्य ने अपनी पुस्तक ***'डिजिटल ट्रान्सफौरमेशन ऑफ हायर एजुकेशन इन इंडिया'*** में लिखा है कि, "भारत में, लॉकडाउन के दौरान, शिक्षा क्षेत्र ने प्राथमिक शिक्षा से लेकर माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा तक बड़े पैमाने पर विभिन्न आभासी उपकरण (डिजिटल परिवर्तन) अपनाए गए। लॉकडाउन ने वर्चुअल लर्निंग, मुफ्त एप्लिकेशन और शैक्षिक वेबसाइटों के उपयोग को प्रेरित किया है और अंततः शिक्षा क्षेत्र ने ऑनलाइन शिक्षण की ओर रुख किया है। हाल के विभिन्न अध्ययनों के द्वितीयक विश्लेषण के आधार पर यह निर्धारित किया गया है कि हमारे देश में शिक्षा के डिजिटलीकरण का स्तर अभी भी संतोषजनक नहीं है। अब समय आ गया है कि विश्वविद्यालयों में मेंटरिंग पद्धति को नए ढंग से लागू किया जाए। नई प्रौद्योगिकियों में बड़े बदलाव अपने साथ प्रशिक्षण व्याख्याताओं के दृष्टिकोण में बड़े बदलाव लाते हैं। आधुनिक तरीकों और तकनीकों पर आधारित शिक्षण के पक्ष में कई तर्क प्रस्तुत किये गये हैं; हालाँकि, साथ ही, कई जोखिमों की पहचान की गई है। ऐसा लगता है कि डिजिटल शिक्षा अगले कई वर्षों में एक मानक वास्तविकता बन जाएगी। इसलिए, इसमें सुधार करना आवश्यक है ताकि यह न्यूनतम दुष्प्रभावों के साथ अधिकतम लाभ पहुंचा सके।

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

केवल अभ्यास ही संभवतः दिखाएगा कि ऐसा उत्तर संभव है या नहीं। यह अक्सर स्वीकार किया जाता है कि डिजिटलीकरण ने शिक्षा को तेजी से, अधिक कुशलता से और कम लागत पर प्रसारित करने में मदद की है, लेकिन इसके भविष्य के वितरण के लिए चुनौतियाँ अनिर्दिष्ट और कुछ हद तक अप्रत्याशित हैं।" ऐसे में यह पुस्तक भी प्रस्तुत शोध के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।

अनड्रेज कैपलन (Andreas Kaplan) द्वारा संपादित पुस्तक ***'डिजिटल ट्रैन्स्फर्मेशन एण्ड डिसरप्शन ऑफ हायर एजुकेशन'*** में कहा गया है कि, "चौथी औद्योगिक क्रांति (4IR) के इस आगमन में, पूरी दुनिया विभिन्न प्रथाओं के लिए प्रौद्योगिकी को अपना रही है। बदलाव की इन हवाओं का असर शिक्षा क्षेत्र पर भी पड़ा है। उच्च शिक्षा संस्थान अब डिजिटलीकरण के परिणामस्वरूप होने वाले इस बड़े बदलाव के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं, जैसा कि पारंपरिक, आमने-सामने से, शिक्षण और सीखने की ऑनलाइन की ओर स्थानांतरण इसकी एक विशेषता है। डिजिटलीकरण एक अच्छी और नेक पहल है, जिसे उच्च शिक्षा संस्थानों को सफल ऑनलाइन शिक्षण और सीखने की सुविधा के लिए अपनाने की आवश्यकता है। कुछ विकासशील देशों में, विशेष रूप से अफ्रीका में, डिजिटलीकरण के परिणामस्वरूप सामाजिक बहिष्कार और डिजिटल विभाजन दोनों बढ़ गए हैं। डिजिटलीकरण के इस युग में, शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं के साथ प्रौद्योगिकी को जोड़ना महत्वपूर्ण है। आजकल ज्यादातर लोगों के पास स्मार्टफोन हैं। अफ्रीका के विकासशील देशों में पहले कभी भी स्कूलों में मोबाइल फ़ोन की अनुमति नहीं थी। शिक्षण संस्थानों में इनका उपयोग लगभग न के बराबर था। उन्हें केवल COVID-19 के आगमन पर सीखने के उपकरण के रूप में अपनाया गया है। इससे पता चलता है कि अधिकांश विकासशील देशों में मोबाइल फोन के लाभों को केवल संकट की स्थिति के दौरान ही पहचाना गया है। यह इस मान्यता के बावजूद है कि डिजिटल प्रौद्योगिकियां विकास को बढ़ावा दे सकती हैं, अवसरों का विस्तार कर सकती हैं और सेवा वितरण में सुधार कर सकती हैं (विश्व बैंक 2016, पृष्ठ 2)। ऐसे में, प्रौद्योगिकी उपकरणों को सभी क्षेत्रों द्वारा विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में अपनाने और उपयोग करने की आवश्यकता है।" यह पुस्तक भी प्रस्तुत शोध के उद्देश्य से उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

'भारत में संचार माध्यमों का उद्भव एवं विकास' नामक रचना, जिसके लेखक डॉ. अंजनी कुमार झा हैं। इस पुस्तक में, "भारत में संचार माध्यमों के औपनिवेशिक काल (1776-बिलियम बोल्ट्स /1780- जेम्स आगस्टस हिकी) एवं स्वतंत्र काल (2016 तक) के विकास का क्रमवार रेखांकन मिलता है।" क्योंकि प्रस्तुत शोध संचार माध्यम (डिजिटल प्रौद्योगिकी) के उपयोग

Kundan Kumar
MB Varm
13.04.2024
Katyayan

को उच्चतर शिक्षा पर प्रभाव एवं संभावित आकांक्षाओं से सम्बद्ध है। अतः यह पुस्तक प्रस्तुत शोध हेतु उपयुक्त है।

प्रो. मणीन्द्र नाथ ठाकुर अपनी पुस्तक, ***'ज्ञान की राजनीति'*** में लिखते हैं कि, "ज्ञान के स्रोतों के समर्थकों के मध्य वर्चस्व के लिए होने वाला संघर्ष ***ज्ञान की राजनीति*** है।......अब समय आ गया है कि इस राजनीति को खारिज कर दिया जाए। क्योंकि *मुक्तिकामी ज्ञान के लिए ज्ञान परंपराओं के बीच संवाद की जरूरत है।......... हमारा उद्देश्य मनुष्य की मुक्ति के लिए ज्ञान सृजन करना होना चाहिए और इसके लिए जहाँ से भी तत्वज्ञान मिल सके उसे ग्रहण करना चाहिए।..........*पिछले कुछ दशकों में हुए *तकनीकी विकास ने तो अनेक सवाल खड़े कर दिए हैं।* रोबाटिक्स, थ्री डाइमेन्शनल प्रिंटिंग, जेनोम एडिटिंग आदि तकनीकी से हमारी दुनिया शायद पूरी तरह से बदल जाए। *इन तकनीकों से मनुष्य के स्वभाव, इसकी क्षमता और व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों पर व्यापक प्रभाव पड़ने की संभावना है।"* क्योंकि डिजिटल तकनीक का उच्चतर शिक्षा में प्रयोग एक प्रकार का नवोन्मेष है और यह परंपरागत शिक्षण एवं सीखने की पद्धति में बदलाव के साथ ही अधिकतम तुलनात्मक अध्ययन सामग्री तक पहुँच को संभव बनाता है जो कि परंपरागत शिक्षण एवं सीखने की पद्धति तथा डिजिटल तकनीक के माध्यम से शिक्षण एवं अध्ययन के लिए राजनीति के बीच वर्चस्व के प्रश्न को जन्म देता है। अतः इनके बीच संवाद के मार्ग को तलाशना ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है। अतः इस दृष्टि से यह पुस्तक प्रासंगिक हो जाता है।

भारतीय जनता पार्टी के घोषणा-पत्र 2014 में उच्च शिक्षा का प्रसार कर भारत को ज्ञान समाज बनाने की बात की गई है, साथ ही अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक क्षेत्र के निजी एवं सार्वजनिक संस्थाओं में आपसी तालमेल बनाकर अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने में शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक और विशेष उपयोग की बात भी की गई है।

भारतीय जनता पार्टी के घोषणा-पत्र 2019 उच्च शिक्षा के बारे में एक स्थान पर कहता है कि, "पिछले पाँच सालों में हमने शिक्षा के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों को एक बेहतर विकल्प समझा है और इन्हें महत्व दिया है। अगले पाँच सालों में हम इसे उच्च शिक्षा का एक प्रमुख संसाधन बनाकर प्रस्तुत करेंगे।"

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' दस्तावेज के अनुसार, उच्चतर शिक्षा में समता और समावेश के लिए सरकार द्वारा उठाए जाने वाले कदम के विषय में कुल नौ बिंदुओं का जिक्र है जिनमें

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan

से नौवां, *"बेहतर भागीदारी और सीखने के परिणामों के लिए प्रौद्योगिकी का निर्माण और विकास"* की बात करता है। इसी दस्तावेज के अनुसार, *"डिजिटल इंडिया अभियान पूरे देश को एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज एवं ज्ञान आधारित अर्थव्ययवस्था में परिवर्तित करने में मदद कर रहा है। इस रूपांतरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ प्रौद्योगिकी भी शैक्षिक प्रक्रिया एवं परिणामों के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस प्रकार, सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी और शिक्षा के बीच द्विदिश संबंध है।"* अतः ये दस्तावेज भी प्रस्तुत शोध के लिए उपयोगी हैं।

डा. बिन्ध्याचल यादव एवं बिजेंद्र कुमार द्वारा संपादित पुस्तक, ***रिसेन्ट इनिश्यटिव इन हाइयर एजुकेशन*** में उल्लेखित है कि, "ज्ञान शक्ति है और इसलिए मानव अस्तित्व को बनाए रखने की सबसे महत्वपूर्ण प्रेरक शक्तियों में से एक बनी हुई है। किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए तेजी से आर्थिक विकास हासिल करने के लिए, एक संभावित, जीवंत और गतिशील उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कौशल आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना आवश्यक है। पिछले कुछ वर्षों में, व्यापार, निवेश, लोगों की गतिशीलता और अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और इसलिए *पुरानी और गैर-प्रासंगिक प्रथाओं को बदलने के लिए उच्च शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।"*

आई टी एवं इलेक्ट्रानिक्स मंत्रालय की 2019 में प्रकाशित **'इंडियाज ट्रिलियन डॉलर डिजिटल ईकानमी'** नामक रिपोर्ट में 2025 तक नौ प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के तीस डिजिटल थीम में भारत को एक ट्रिलिऑन डॉलर की आर्थिक मूल्य वाली डिजिटल व्यवस्था बनाने की बात की गई है। इन नौ प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में एक प्राथमिकता वाला क्षेत्र 'भविष्य के लिए गुणवत्ता शिक्षा' है। जिसके दो थीम हैं -

1. छात्रों को एक ऐसा एकीकृत डिजिटल शिक्षा मंच प्रदान करना जहां स्थानीय भाषा में सामग्री मिल सके । और
2. विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल समग्री का वितरण ताकि इनका उपयोग शिक्षण हेतु किया जा सके।

लेख

लीटॉन मल्लिक (Liton Mallick) एवं गुहा ठाकुरता (Guha Thakurta) का लेख ***'DIGITAL INDIA IN REDEFINING HIGHER EDUCATION: VISTA OF THE***

MBKumar
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

FUTURE' के अनुसार, "निकट भविष्य में भारत को दुनिया की अगली ज्ञान महाशक्ति के रूप में तैयार करने के लिए, हमारी कामकाजी आबादी को ज्ञान सक्षम कामकाजी आबादी में बढ़ावा देने और तैयार करके एक ज्ञान पावरहाउस में हमारे जनसांख्यिकीय लाभ का उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है और डिजिटल तकनीक का उपयोग इस दिशा में सहायक सिद्ध हो सकता है। .... कई निजी शिक्षण संस्थान - K-12 से उच्च शिक्षा तक - भौतिक से ऑनलाइन शिक्षण मोड में संक्रमण करने में त्वरित और चुस्त थे। दूसरी ओर, आईआईटी, आईआईएम, एनआईटी और कुछ केंद्रीय विश्वविद्यालयों जैसे कुछ शीर्ष संस्थानों के अलावा, *अधिकांश सरकारी शैक्षणिक संस्थान* इस संक्रमण को करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इन संस्थानों द्वारा सामना की जाने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियों में *पर्याप्त डिजिटल संसाधनों की कमी, प्रौद्योगिकी में न्यूनतम या कोई निवेश नहीं है, और आभासी शिक्षण और मूल्यांकन उपकरणों का उपयोग करने में शिक्षकों / संकाय के लिए प्रशिक्षण के अवसरों की कमी है।"* इसी लेख में इस बात का भी जिक्र किया गया है कि, सामाजिक-आर्थिक रूप से अमीर और गरीब छात्रों को समान शैक्षणिक अवसर नहीं मिलते। साथ ही, इंटरनेट की बेहतर कनेक्टिविटी का अभाव भी एक समस्या के रूप में चिह्नित किया गया है।

आर. के. महालक्ष्मी (R. K. MAHALAKSHMI) एवं डॉ. जे. कामाट्ची ईश्वरण (DR. J. KAMATCHI ESWARAN) अपने लेख ***DIGITAL INDIA IMPLICATION IN EDUCATION SECTOR*** में लिखते हैं कि, "डिजिटल इंडिया भारत में शैक्षिक चुनौतियों से निपटने में एक कुंजी है, परंतु इसके लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर, विकसित डिजिटल पारिस्थितिकी का होना आवश्यक है।"

C.K. HEBBAR ने अपने लेख ***IMPACT OF DIGITAL INDIA ON EDUCATION SYSTEM*** में डिजिटल इंडिया को शिक्षा के लिए सकारात्मक प्रभाव वाला बताया है, परंतु सूचना की प्रामाणिकता के अभाव जैसी अन्य कई नकारात्मक प्रभावों का उल्लेख भी किया है।

SUNIL GAWANDE ने अपने लेख ***DIGITAL INITIATIVES FOR HIGHER EDUCATION IN INDIA: A TECHNOLOGICAL REVOLUTION*** में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विषय में लिखा है कि, "ज्ञान आधारित समाज का सफल निर्माण भारत के लिए महत्वपूर्ण अवसर लाएगा, जबकि इसकी विफलता देश को न केवल आर्थिक बल्कि राजनीतिक संकट की ओर भी ले जा सकती है।"

Kundan Kumar Katyayan 13.04.2024

MBVerma 13.04.2024

उपर्युक्त साहित्यों के अतिरिक्त भी अन्य विद्वानों ने कई पुस्तकें लिखी है जो प्रस्तुत अनुसंधान के लिए उपयोगी हैं साथ ही कई अप्रकाशित शोध प्रबंध डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के संदर्भ में किए हैं जो कि शोधगंगा राष्ट्रीय पोर्टल पर उपलब्ध हैं। उपर्युक्त अध्ययन बिहार को केंद्र में रखकर डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के प्रभाव को राजनीतिक दृष्टि से उच्चतर शिक्षा पर विश्लेषण नहीं किया गया है। अतः यह शोध प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है, जो कि राजनीतिक सत्ता, लोक-नीति, बिहार, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम, एवं उच्चतर शिक्षा खासकर सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, यह प्रस्ताव इन सभी दृष्टि से प्रासंगिक एवं उपयुक्त है साथ ही सामाजिक विज्ञान में उच्च शिक्षा तथा डिजिटल इंडिया कार्यक्रमों के अन्तः संबंधों को समग्र रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

शोध कार्य का उद्देश्य

1. बिहार की वर्तमान उच्चतर शिक्षा व्यवस्था की स्थिति का पता लगाना।
2. बिहार में इन्टरनेट उपयोग हेतु उच्चतर शिक्षा के स्तर पर डिजिटल अवसंरचना की स्थिति का पता लगाना।
3. बिहार की उच्चतर शिक्षा में अध्ययन-अध्यापन हेतु इन्टरनेट के उपयोग में शिक्षार्थियों तथा शिक्षकों को मिलने वाली सहायता एवं होने वाली समस्याओं का पता लगाना।
4. बिहार में डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से प्राप्त सुविधाओं के संदर्भ में उच्चतर शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के उपायों की पड़ताल करना।
5. बिहार की उच्चतर शिक्षा के उत्थान में 2015-2023 के दौरान प्रांत एवं केंद्र सरकार की भूमिका का पता लगाना।
6. शिक्षा, सरकार और राजनीति के त्रिकोण में बिहार में उच्चतर शिक्षा हेतु डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता के मार्ग तलाश करना।
7. बिहार की उच्चतर शिक्षा से डिजिटल विभाजन को पाट कर 'ज्ञान अर्थव्यवस्था' में भागीदारी की चुनौतियों एवं संभावनाओं की खोज करना।
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा 2035 के लिए लक्षित उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 50% करने में बिहार एवं डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की भागीदारी के मार्ग तलाशना।
9. उच्चतर शिक्षा के प्रसार से डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता के समक्ष चुनौतिओं एवं संभावनाओं की पड़ताल करना।

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

शोध परिकल्पना :-

1. बिहार के उच्च स्तरीय सार्वजनिक शिक्षण संस्थानों में पर्याप्त भौतिक एवं डिजिटल अवसंरचना की उपलब्धता अपरिहार्य है।
2. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम उच्चतर शिक्षा विशेष रूप से सामाजिक विज्ञान में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार करने हेतु एक सहायक कार्यक्रम है।
3. सामाजिक विज्ञान के विषयों के उच्चतर शिक्षा में मात्रात्मक एवं गुणात्मक सुधार डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता में सकारात्मक योगदान देने वाला एक सशक्त माध्यम है।
4. लोकनीति की सफलता के लिए प्रासंगिक अवसंरचना का होना अपरिहार्य है।

प्रस्तुत शोध कार्य का अनुशासन एवं अन्य अनुशासन के लिए योगदान:-

प्रस्तुत शोध कार्य लोकनीति एवं कार्यक्रम के संदर्भ में है। ऐसे में यह *राजनीति विज्ञान* के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि लोकनीतियों के प्रभाव का मूल्यांकन आवश्यक है, ताकि लोककल्याण में बढ़ोतरी हो सके और साथ ही उन लोकनीतियों में संभावित सुधार किए जा सकें। यह शोध *शिक्षाशास्त्र* के लिए भी महत्वपूर्ण होगा क्योंकि इससे उन बातों को जानने में सहयोग मिलेगा जो कि छात्रों को शिक्षण संस्थान की ओर आकर्षित करेंगे एवं शिक्षण संस्थानों में बनाए रखने में सहायक होंगे। साथ ही यह शोध *लोकप्रशासन* के लिए भी उपयोगी होगा क्योंकि किसी लोकनीति को लागू करने में लोकप्रशासक ही जिम्मेवार होते हैं। अतः प्राप्त निष्कर्ष लोकप्रशासन विषय के लिए भी महत्वपूर्ण साबित होगा। क्योंकि उच्चतर शिक्षा को बहुआयामी प्रभावोत्पन्नकर्त्री माना जाता है। अतः समग्र दृष्टि से यह अध्ययन सामाजिक विज्ञान संकाय के सभी अनुशासनों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इतना ही नहीं यह शोध प्राकृतिक विज्ञान संकाय के लिए भी महत्वपूर्ण होगा क्योंकि तकनीकी प्रगति अंततः समाज के विकास के लिए उपयोगी माने जाते हैं। ऐसे में वर्तमान समाज के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकी सुधार हेतु तकनीकी दृष्टि से किन-किन अपेक्षाओं या आवश्यकताओं का जन्म हुआ है इस अनुसंधान द्वारा इसे जानने में भी मदद मिलेगी ताकि उस दिशा में प्राकृतिक विज्ञान अपना कार्य कर सकें।

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

पद्धतीय उपागम:-

प्रस्तुत शोध की पद्धति मुख्यतः आनुभविक होगी। परंतु इस शोध को पूरा करने के लिए ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक, सह-संबंधात्मक, सादृशयात्मक, निगमनात्मक एवं आगमनात्मक पद्धतियों का उपयोग भी वांछित है।

शोध अभिकल्प के रूप में **निदानात्मक अनुसंधान अभिकल्प (DIAGNOSTIC RESEARCH DESIGN)** प्रस्तुत शोध के लिए प्रासंगिक है।

आनुभविक आंकड़ों की प्राप्ति के लिए **समानुपातिक वर्गीय निदर्शन (PROPORTIONATE STRATIFIED SAMPLING) एवं क्षेत्रीय निदर्शन पद्धति (AREA SAMPLING METHOD)** का प्रयोग किया जाएगा।

कार्य प्रारूप: अस्थायी कार्य योजना/अध्यायीकरण :-

1. भूमिका
2. राजनीतिक चिंतन, राज्य एवं शिक्षा
3. भारत में उच्चतर शिक्षा एवं बिहार
4. उच्चतर शिक्षा में डिजिटल अवसंरचना: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
5. डिजिटल इंडिया कार्यक्रम, उच्चतर शिक्षा और बिहार
6. निष्कर्ष एवं सामान्यीकरण

20/4/24

M. Kumar
20/4/24

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan
13.04.2024

संदर्भ ग्रंथसूची

प्राथमिक स्रोत

इंडिया रिपोर्ट ऑन डिजिटल एजुकेशन . (2021). https://www.education.gov.in

उच्चतर शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण, (2014-15). https://www.aishe.gov.in

उच्चतर शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण, (2021-22). https://www.aishe.gov.in

उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार का आधिकारिक वेबसाइट, (2023). https://www.education.gov.in

एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली प्लस का वार्षिक प्रतिवेदन . (2023). https://www.udiseplus.gov.in

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम दस्तावेज. (2015). https://www.meity.gov.in

इंडियाज ट्रिलिऑन-डॉलर डिजिटल ऑपरचूनिटी रिपोर्ट . (2019). https://www.meity.gov.in

बिहार सरकार का वार्षिक वित्तीय विवरण दस्तावेज. (2015-16). https://www.state.bihar.gov.in

बिहार सरकार का वार्षिक वित्तीय विवरण दस्तावेज. (2023-24). https://www.state.bihar.gov.in

भारतीय जनता पार्टी का घोषणा पत्र. (2014 एवं 2019). https://www.bjp.org

भारत सरकार का वार्षिक वित्तीय विवरण दस्तावेज. (2015-16). https://www.dea.gov.in

भारत सरकार का वार्षिक वित्तीय विवरण दस्तावेज. (2023-24). https://www.dea.gov.in

यूनेस्को का वैश्विक शिक्षा निगरानी प्रतिवेदन. (2023). शिक्षा में प्रौद्योगिकी: उपकरण किस कीमत पर?,https://www.unesco.org

यू. जी. सी. यू-ट्यूब ऑफिसियल चैनल .

राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क प्रतिवेदन . (2016). https://www.nirfindia.org

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan

राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क प्रतिवेदन . (2023). https://www.nirfindia.org

राष्ट्रीय शिक्षा नीति दस्तावेज . (2020). https://www.education.gov.in

राज्य सभा के शिक्षा, महिला, बच्चे, युवा, और खेल पर विभाग संबंधित संसदीय स्थायी समिति के उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन पर 356 वीं रिपोर्ट. (2023). https://www.sansad.in

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का वार्षिक प्रतिवेदन,(2014-15). https://www.ugc.gov.in

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का वार्षिक प्रतिवेदन,(2021-22). https://www.ugc.gov.in

हाइयर एजुकेशन इन इंडिया: विज़न 2047. (2022). https://www.ey.com

मानचित्र निर्माण- https://paintmaps.com

द्वितीयक स्रोत

पुस्तक

अहमद, स. (2017). समसामयिक भारत की शिक्षा व्यवस्था . कानपुर: अनुसंधान प्रकाशन

आनन्द, स्मि. (2017). हाइयर एजुकेशन इन बिहार: फ्रॉम नालंदा टू नोह्वेर . नई दिल्ली: अभिजीत पब्लिकैशन

कुमार, नी. (2007). *द पॉलिटिक्स* ऑफ जेन्डर, कम्यूनिटी एण्ड माडर्निटी: एस्सेज ऑन एजुकेशन इन इंडिया . दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

कुमार, कृ. (2005). पोलिटिकल अजेन्डा ऑफ एजुकेशन: अ स्टडी ऑफ कोलोनीयलिस्ट एण्ड नैश्नलिस्ट आईडियाज . नई दिल्ली: सैज पब्लिकेशन्स

कैपलन, ए. (2022). डिजिटल ट्रैन्स्फर्मैशन एण्ड डिस्रप्शन ऑफ हाइयर एजु*केशन* . कैंब्रिज, इंग्लैंड: कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

गुप्ता, सु. प्र., और गुप्ता, अ. (2021). भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्यायें . प्रयागराज: शारदा पुस्तक भवन

चंद्र. स. (2022). मध्यकालीन भारत: राजनीति, समाज और संस्कृति (न. नदीम अनुवाद) . तेलंगाना: ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड प्रकाशन

MBVerma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan

झा, डॉ. अं. कु. (2016). भारत में संचार माध्यमों का उद्भव एवं विकास . जयपुर: पोइंटर पब्लिशर्स

ठाकुर, म. ना. (2022). ज्ञान की राजनीति: समाज अध्ययन और भारतीय चिंतन . नोएडा: सेतु प्रकाशन प्रा. लि.

ठाकुर, प्र. (2018). भारत में डिजिटल क्रांति . नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन

देशपांडे, एच. वी. (2020). हाइयर एजुकेशन इन इंडिया: न्यू पर्सेप्शन एण्ड पर्स्पेक्टिव . चेन्नई: नोशन प्रेस

थॉमस, प्र. नि. एवं अन्य. (2019). द पोलिटिक्स ऑफ डिजिटल इण्डिया: बिटवीन लोकल कंपल्जन्स एण्ड ट्रांसनेशनल प्रेशर्स. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड प्रेस

फड़िया, डॉ. बी. एल. और फड़िया डॉ. कु. (2019). भारतीय शासन एवं राजनीति . आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन

बेरा, स्व. कु., नस्कर, स. और बीजाली, अ. (2021). डिजिटल ट्रैन्स्फर्मैशन ऑफ हाइयर एजुकेशन इन इंडिया . अहमदाबाद: रुद्र प्रकाशन

भूषण, सु. (2021). गवर्नन्स ऑफ हाइयर एजुकेशन इन बिहार: इन्फ्लूअन्स ऑफ पावर सेंटर्स . नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया पब्लिकैशन

मित्तल, डॉ. ए. के. (2010). भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास: सिंधु सभ्यता से 1526 . आगरा: साहित्य भवन पब्लिकैशन

मित्तल, डॉ. ए. के. (2010). भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास: सिंधु 1526-1950 . आगरा: साहित्य भवन पब्लिकैशन

महाजन, वि. (1983). आधुनिक भारत का इतिहास . नई दिल्ली: एस. चाँद एण्ड कम्पनी लिमिटेड

यादव, डॉ. बि. और कुमार, बृ. (2017). रीसन्ट इनिश्यटिव इन हाइयर एजुकेशन . दिल्ली: डी. पी. एस. पब्लिशिंग हाउस

वालर, लो. जी. (2022). डिजिटल ट्रैन्स्फर्मैशन फॉर हाइयर एजुकेशन इन्स्टीट्यूशन्स: अ फ्रेमवर्क फॉर दी फ्यूचर . जमैका: लैन रेन्डेल पब्लिशर्स

MBVarma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan

सप्रू, आर. के. एवं सप्रू, वाय. (2019). पब्लिक पॉलिसी: फॉर्म्यूलैशन, इम्प्लिमेन्टेशन एण्ड ईवैल्यूऐशन . नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स

सिन्हा, अ. (2017). डिजिटल इण्डिया: गवर्नेंस ट्रांसफॉर्मेशन. अ. सिन्हा द्वारा संपादित, नई दिल्ली: वितस्ता पब्लिशिंग प्रा. लि.

शर्मा, सं., जोशी, प्रि. और मीना, ज. सिं. (2013). लोकनीति: सिद्धांत एवं व्यवहार . इलाहाबाद: किताब महल प्रकाशन

शरण, शं., और कुमार, वि. (2016). शिक्षा और राजनीति . नई दिल्ली: अनन्या प्रकाशन

श्रीवास्तव, कृ. चं. (2019). प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति . इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो प्रकाशन

कुमार, नी. (2007). द पॉलिटिक्स ऑफ जेन्डर, कम्यूनिटी, एण्ड मॉडर्निटी: एस्से ऑन एजुकेशन इन इंडिया . नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

शोध आलेख

कुणडारा, सं. कु. (2021). कोरोना काल में उच्च शिक्षा का बदलता परिदृश्य, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेज्मेन्ट, अप्लाइड साइंस & सोशल साइंस, वॉलु. 03, प्रकाशन 02, 99-102

कुमार, प्रो. अ. और अब्बास, एमएस. जै. (2019). हाइयर एजुकेशन इन डिजिटल इंडिया, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन बिजनस स्टडीस, वॉलु. 4, प्रकाशन 1, 79-88

गवांडे, एस. एम. (2020). डिजिटल इनिश्यटिव फॉर हाइयर एजुकेशन इन इंडिया: अ टेक्नोलॉजीकल रेवलूशन, यूनिवर्सिटी न्यूज: अ वीकली जर्नल ऑफ हाइयर एजुकेशन, वॉलु. 58, प्रकाशन 15, 06-10

छंगनी, एम. के. एस. और हुसैन, एस. आइ. (2023). डिजिटल ट्रैन्स्फर्मैशन ऑफ हाइयर एजुकेशन: लीवरेजिंग ई-गवर्नन्स इन इंडिया, इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नॉलजी, वॉलु. 10, प्रकाशन 07, 390-399

जगटेप, ए. आर. और कजागार, आइ. आर. (2018). डिजिटाइजेशन फॉर डिसेन्ट्रलाइज्ड गवर्नेंस इन इण्डिया. द इण्डियन जर्नल ऑफ पोलिटिकल साइंस, वॉलु. 79, प्रकाशन 4, 772-780.

MBVarma
13.04.2024

Kundan Kumar
Katyayan

जैन, आर., ली. ई. पी. एच. और ली. जे. टी. एच. (2023). दी रोल ऑफ द इंडियन पोलिटिकल रिजिम इन हाइयर एजुकेशन रिफॉर्मस फॉर इनोवैशन ड्राइव: की कोम्पेरिजनस विद चाइना, जर्नल ऑफ एशियन एण्ड अफ्रीकन स्टडीस, वॉलु. 58, प्रकाशन 8, 665-685

पाण्डेय, सं. कु. (2016). डिजिटल इंडिया से बदलेगी शिक्षा की तस्वीर, योजना .

मल्लिक, एल. और ठाकुरता, ए. जी. (2022). डिजिटल इंडिया इन रिडीफाइनिंग हाइयर एजुकेशन: विस्टा ऑफ थे फ्यूचर, एक्सिलेन्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वॉलु. 12, प्रकाशन 3, 57-65

महालक्ष्मी, आर. के. और ईश्वरण, डॉ. जे. के. (2019). डिजिटल इंडिया इम्प्लिकैशन इन एजुकेशन सेक्टर, रिसर्च इक्स्प्लोरर-अ ब्लाइन्ड रिव्यू & रेफर्ड क्वार्टर्ली इंटरनेशनल जर्नल, वॉलु. 7, प्रकाशन 2, 01-07

मिश्रा, डी. पी. एवं शर्मा, गौ. (2023). उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि, IISN0973-8541, वॉलु. 18, प्रकाशन 1, 132-137

मिश्रा, डॉ. सी. (2017). भूमंडलीय समय में ई-लर्निंग का उच्च शिक्षा पर प्रभाव . इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉलु. 04, प्रकाशन 15, 442-448

शर्मा, डॉ. वी. के. (2017). भावी उच्च शिक्षा का विकास एवं भावी शिक्षा नीति, मदर्हुड इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडीसीप्लिनरी रिसर्च & डेवलपमेंट, वॉलु. 2, प्रकाशन 1,15-18

हेब्बर, सी. के. (2020). इम्पैक्ट ऑफ डिजिटल इंडिया ऑन एजुकेशन सिस्टम, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ केस स्टडीज इन बिजनेस, आई. टी. एण्ड एजुकेशन, वॉलु. 4, प्रकाशन 2, 65-70

टेलीविजन प्रसारण

चौधरी, म. और झा, वि. (प्रोडक्शन). 29.09.2023. *भारत में डिजिटल क्रांति* . संसद टी वी विशेष.

राज्यसभा टी वी विशेष . 05.07.2015. *डिजिटल इंडिया* .

MBVerma
13.04.2024
Supervisor
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

Kundan Kumar Katyayan 13.04.2024

20.04.24
Head
University Department of Political Science
Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga

MBVerma
20.04.2024